Deg-2
MHJ+(H) P-II

महाराष्ट्र एवं दक्षिण राज्य - (दूसरा चरण)

अलाउद्दीन ने महाराष्ट्र और दक्षिण राज्य को सल्तनत में शामिल न करने की एक सुनिर्धारित नीति अपना रखी थी। किन्तु स्थिति में परिवर्तन हुआ और उसे अपने जीवन काल में ही इस नीति में संशोधन करना पड़ा। सन 1315 ई० में देवगिरि के शासक रामदेव की मृत्यु हो गई और उसके बाद राजगद्दी पर उसका पुत्र भिल्लमा आसीन हुआ जिसने अलाउद्दीन के आधिपत्य को मानने से इंकार कर दिया। अलाउद्दीन ने भिल्लमा को दंडित करने के लिए मलिक कापूर को इस अनुदेश के साथ भेजा कि भिल्लमा को दिल्ली भेज दिया जाए और उसके राज्य को दिल्ली सल्तनत में सम्मिलित कर लिया जाए। लेकिन भिल्लमा भाग गया। कापूर ने किले पर अधिकार कर लिया तथा पुराने मराठा सरदारों को हटाए बगैर उस राज्य पर शासन करने का प्रयास किया।

अलाउद्दीन द्वारा समायोजन की नीति अपनाये जाने के सम्बन्ध में यहाँ थोड़ी चर्चा करना आवश्यक है। अलाउद्दीन ने महसूस किया कि अन्य दक्षिणी राज्यों पर कूटनीतिक और यदि आवश्यक हुआ तो सैनिक दबाव डालकर उन पर अंकुश रखने के लिए देवगिरि पर प्रत्यक्ष तुर्की नियंत्रण आवश्यक है। इस प्रकार, दक्षिण में विजित राज्यों के संदर्भ में समायोजन की

P.T.O

नीति को संशोधित रूप में अपनाया गया।

लेकिन अलाउद्दीन के बाद मुबारक खिलजी ने सुल्तान की गद्दी संभाली तो उसने देवगिरी को अपने नियंत्रण में प्रभावी ढंग से लाने के लिए उस पर चढ़ाई की। बिना अधिक विरोध का सामना किए ही उसने अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लिया।

दक्षिण में विजित राज्यों के सम्मेलन के संबंध में अलाउद्दीन की नीति के ~~परित्याग~~ परित्याग का श्रेय वस्तुतः गियासुद्दीन तुगलक और उसके पुत्र एवं उत्तराधिकारी मुहम्मद बिन तुगलक को दिया जाना चाहिए।

समस्त तेलंगाना को दिल्ली सल्तनत में सम्मिलित कर लिया गया। इसे भी जिलों में विभाजित किया गया और उनके प्रशासन के लिए अधिकारी नियुक्त किए गए, और एक वर्ग भू-राजस्व वसूल किया गया। वारंगल का नाम बदलकर सुल्तानपुर रख दिया गया।

तेलंगाना को जीतने के बाद माबर को जीता गया। इस प्रकार माबर की राजधानी मदुरै पर सन् 1323 ई० में कब्जा कर लिया गया। अन्त में सन् 1328 ई० में मुहम्मद बिन तुगलक के एक चचेरे भाई गरशास्प जिसने दक्षिण कर्नाटक के कम्पिला के शासक के पास शरण ले रखी थी, ~~ओर~~ सेना भेजकर कर्नाटक को भी सम्मिलित कर लिया गया।

इस प्रकार 12 वर्षों के छोटे से समयांतराल में आलावार की सीमाओं तक समस्त दक्षिण भारत को दिल्ली के सल्तनत प्रशासन के अधीन कर लिया गया।